G.P. - Psychology
B.A. I (H) - Paper - I

Cannon-Bard Theory of Emotion

संवेग की व्याख्या करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इसमें कैनन-बार्ड सिद्धान्त एक प्रमुख सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मूलतः Cannon (1927) द्वारा किया गया। बाद में Bard (1934) अपने शोध के आधार पर इसका समर्थन किया। इसलिए इस सिद्धान्त को कैनन-बार्ड सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है।

इस सिद्धान्त को केन्द्रीय सिद्धान्त, थैलमिक सिद्धान्त और हाइपोथैलमिक सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग में केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र, थैलेमस और हाइपोथैलेमस का महत्वपूर्ण योगदान है। इस सिद्धान्त को निम्न चित्र से समझा जा सकता है :-

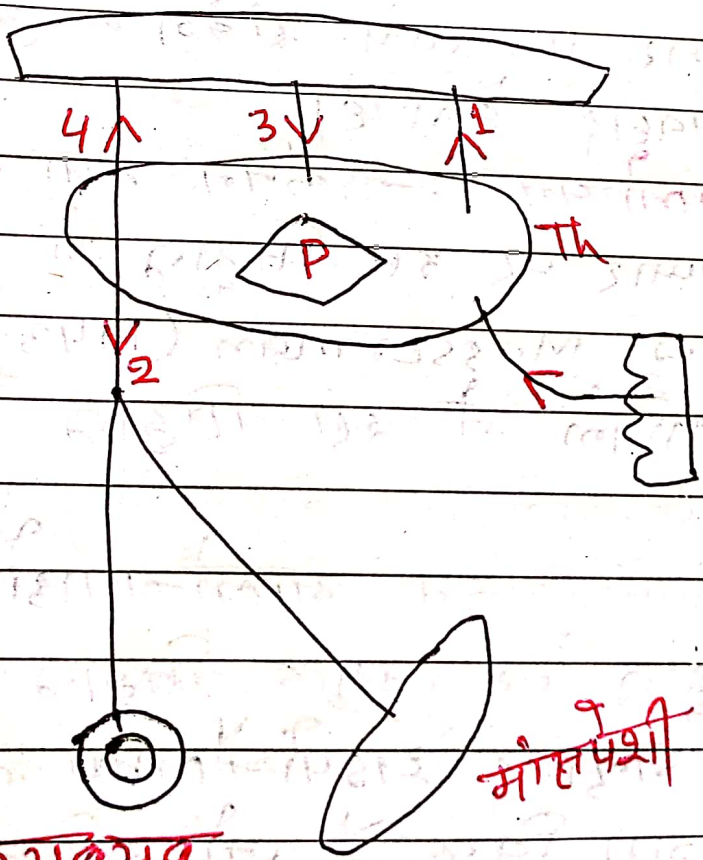

कैनन-बार्ड सिद्धान्त के अनुसार संवेग उत्पन्न होने में निम्नांकित कदम होते हैं :-

(1) संवेग उत्पन्न होने के लिए संवेगात्मक उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रिय को उत्तेजित होना आवश्यक है।

(2) ज्ञानेन्द्रिय से तंत्रिका आवेग हाइपोथैलमस या थैलमस होते हुए मार्ग सं० 1 से प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँचता है।

(3) प्रमस्तिष्क वल्क मार्ग सं० 3 से तंत्रिका-आवेग भेजकर हाइपोथैलमस पर से नियंत्रण कम कर देता है जिससे हाइपोथैलमस या थैलमस पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाता है।

(4) हाइपोथैलमस से एक-साथ तंत्रिका आवेग मार्ग-सं० 2 से अन्तरावयव एवं मांसपेशियों में और मार्ग सं० 4 से प्रमस्तिष्क वल्क में जाता है। इस प्रकार एक साथ संवेग का अनुभव एवं संवेगात्मक व्यवहार होता है।

आलोचना :- कैनन-तथा बार्ड ने कई प्रयोगों के आधार पर इस सिद्धान्त को सबलता प्रदान की है। परन्तु Massermam (1943) एवं कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धांत की आलोचना की है।

इन आलोचनाओं के बावजूद भी यह सिद्धान्त एक प्रमुख सिद्धान्त है क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलमस तथा थैलमस संवेग का उद्गम बिन्दु है जो अधिकतर मनोवैज्ञानिकों को मान्य है।

Scanned with CamScanner